ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL04292
RNI REG. NO. UPBIL/2014/66218 PP. No.- 72-76

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-18, No.- II, Issues-32, YEAR- April-June-2024

गंगा आस्था एवं प्रदूषण का एक समाजवैज्ञानिक अध्ययन (वाराणसी जनपद में चयनित अस्सी घाट के विशेष संदर्भ में)

1. डॉ0 अनुराग द्विवेदी
2. सुधीर कुमार

1. प्रोफेसर – अध्यक्ष, 2. शोध अध्येता– समाजशास्त्र विभाग, दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर (उ0प्र0), भारत

Received-13.04.2024, Revised-20.04.2024, Accepted-25.04.2024 E-mail: sudhirmgkv@gmail.com

सारांश: *गंगा जन–जन की प्रिय भारत की एक विशेष नदी है जिसके इर्द–गिर्द सभ्यता एवं संस्कृति की यादें, आशाएँ, भय, विजय गीत, जीत–हार, की बहुत सारी कहानियां जुड़ी हुई है। यह भारत की प्राचीन संस्कृति एवं सभ्यता का प्रतीक है जो निरंतर बदलती और बहती रहती है। गंगा सभी मानव समाज की आराध्य है, यह सबके घर–घर में वास करती है। भारतीय इतिहास एवं संस्ति में गंगा को धार्मिक एवं आर्थिक महत्त्व प्राप्त है। वह सर्वकालिक एवं सर्वविदित है। आज भी देखा जाये, तो हिन्दुओं में जितने भी धार्मिक कार्य एवं संस्कार होते है। उन सभी में गंगा जल अनिवार्य तत्व के रूप में प्रयोग किया जाता है, बिना इसके किसी भी धार्मिक कार्य को सम्पूर्ण नही माना जाता है, लोगो में गंगा जल के प्रति इतना सम्मान है कि लोग गंगा जल को दूर–दूर से ढोकर अपने–अपने घरो में ले जाते हैं, यदि उनके पास गंगा जल पीने के लिये थोडा कम होता है, तो वो उसे अपने उपर छिड़क लेते हैं और अपने आप को पवित्र मान लेते हैं। प्रस्तुत शोध का प्रमुख उद्देश्य गंगा किनारे निवास करने वाले लोगों की प्रस्थिति का अध्ययन, गंगा के प्रति लोगों की आस्था, गंगा नदी में होने वाले प्रदूषण के कारण का पता लगाना, गंगा सफाई के लिए सरकार एवं गैर सरकारी संगठनों द्वारा चलाई गई परियोजनाओं का अध्ययन करना है। जिससे गंगा में होने वाले प्रदूषण के मात्रा को कम किया जा सके। यह शोध पत्र प्रमुख रूप से उत्तर–प्रदेश में वाराणसी जनपद के अस्सी घाट पर आधारित है, जिसमें अन्वेषणात्मक, विवरणात्मक एवं निदानात्मक शोध प्ररचना का उपयोग किया गया है। तथ्यों के प्राथमिक संकलन हेतु सोद्देश्यपूर्ण निदर्शन का प्रयोग करते हुए 30 उत्तरदाताओं का चयन किया गया है। द्वितीयक श्रोत के अंतर्गत विभिन्न समाचार पत्रों, शोध पत्रों, शोध प्रबंधों, पत्र–पत्रिकाओं , पुस्तकों, इन्टरनेट आदि का यथासंभव प्रयोग किया गया है।*

कुंजीभूत शब्द– गंगा, पवित्र, आस्था, प्रदूषण, सभ्यता, संस्कृति, आराध्य, धार्मिक एवं आर्थिक महत्त्व, सर्वकालिक, सर्वविदित।

गंगा भारत की आत्मा के नाम से जानी जाती है तथा यह हर भारतीयों के लिए जीवनदायिनी एवं पूज्यनीय है जिससे इनकी पहचान होती है। जियो और जीने दो, सेवा और त्याग, सत्य अहिंसा, तथा कण–कण व जन– जन में ईश्वर के स्वरूप का दर्शन कराने वाली हमारी भारतीय संस्कृति–दर्शन व आध्यात्म की आधारशिला अमृतसलिला माँ गंगा है। इन्हें भगवान ब्रम्हा का निराकार रूप भी कहा जाता है। तत्वदर्शी माँ गंगा को सृष्टि निर्माता ब्रम्हा, सृष्टि के पालनहार भगवान विष्णु एवं सभी संहारकर्ता भगवान शिव का समष्टि रूप कहते हैं, ऐसा माना जाता है कि गंगा जल में सभी तीर्थों की पवित्रता समाई हुई है। भारत का हर निवासी गंगा को गंगा मईया कहकर बड़े सम्मान के साथ संबोधित करता है और हर भारतीय के मन में आज भी गंगा के प्रति वह सम्मान एवं श्रद्धा विद्यमान है जो हजारों वर्षों पहले इनके मन में हुआ करता था। ऐसा माना जाता है कि गंगा के दर्शन से, उनका आचमन कर लेने से, स्पर्श करने से, नाम जपने से यहां तक कि केवल स्मरण करने से मानव के सभी पाप धुल जाते हैं और वो कई जन्मों के पापों से मुक्त हो जाता है। विष्णु पुराण में कहा गया है कि जो भी मानव हजारों योजन की दूरी से भी गंगा का स्मरण कर लेता है, उसके सारे पाप धुल जाते हैं। गंगा भारतीय इतिहास, दर्शन, चेतना, संस्ति एवं सभ्यता का प्रतीक है। भारत की इक्कीस करोड़ जनसँख्या गंगा को अपनी माँ के रूप में देखती है।[1] इतिहास इसका साक्षी रहा है कि भारत की सभ्यता और संस्ति का विकास नदियों के किनारे ही विकसित, प्रफुल्लित एवं पल्लवित हुई है, जिसका प्रमुख कारण पानी है जो मनुष्य ही नहीं वरन सभी प्राणियों की मूलभूत आवश्यकता है , यहाँ तक की गंगा के औषधीय गुण से पश्चिम समाज आश्चर्य चकित है कि इसका पानी वर्षों रख देने पर भी कभी सड़ता नहीं है और इसके पवित्र दिव्य जल में सभी रोगों के उपचार करने की क्षमता है, हिमालय के वनों से पैदा होने वाली जड़ी–बूटियाँ गंगा जल की धारा में घूल–मिल जाती हैं। ऊँची पर्वतमाला में पायी जाने वाली ऐसी अनेको जड़ी बूटियाँ जो कायाकल्प में सक्षम है, गंगा जल में स्वतः ही घुलती रहती है, वैज्ञानिक अध्ययनों से पता चलता है कि हिमालय पर्वत में खनिज स्टेराईड और संजीवनी पौधे भरपूर मात्रा में उपलब्ध है जो मानव एवं सभी प्राणियों के असाध्य रोगों का उपचार करने में सक्षम है।[2]

ऐसी पवित्र, मोक्षदायिनी ,पतित पावनी होने के बाद भी गंगा के जल को मानव अपनी सुविधाओं के लिए इसकी अमृत धारा को भी मल–धारा और विषधारा में बदल दे रहे हैं। अपनी सुख–सुविधाओं एवं कभी ना खत्म होने वाली इच्छाओं में हमने भूल वश या लोभ में आकर या फिर स्वार्थ में फसकर अमृत सलिल गंगा की हत्या कर दी है, और ऐसे में हम अपना सर्वस्व गवाने पर लग गये हैं। मानव के कुकृत्यों से अब स्थिति इतनी भयावह होती जा रही है कि निकट भविष्य में हम अपनी पहचान, संस्कृति, सभ्यता धर्म, दर्शन और अंतिम में हमारी जीवन लीला भी समाप्त हो सकती है। युगों–युगों से प्रवाहित माँ गंगा से हमारी आने वाली पीढियाँ वंचित होने जा रही है। हाल ही में हुए पृथ्वी सिखर सम्मलेन की दृष्टि से हम देखे तो गंगा पर बाँध बनाकर और गंगा को मिटाकर हम विकास नहीं बल्कि विनाश की और बढ़ते जा रहे हैं, क्योंकि पृथ्वी सिखर सम्मलेन के अनुसार विकास का अर्थ एक ऐसे विकास से है, जिसमे हम अपना विकास करते हुए समस्त धरोहर,संपदा, वस्तु को विरासत के रूप में अपनी आने वाली अगली पीढ़ी को पंहुचा सकें। विकास की यही दृष्टि समकालीन है जो अनादिकाल से ही मानव संस्कृति का अंग रहा है। इसी के कारण मानव संस्कृति हमेशा के लिए कालजयी और अविरल प्रवाहमान रही है लेकिन यह कैसी विडंबना है कि विकास की इस निति को हम सब खुद ही मिटा रहे हैं जिसके कारण माँ

अनुरूपी लेखक / संयुक्त लेखक

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-18, No.- II, Issues-32, YEAR- April-June-2024

गंगा को बांधकर और उनके अस्तित्व को खतरे में डालकर हम विकास नहीं विनाश की ओर अग्रसर हो रहे है और अपने इस कु.त्य से अपने आने वाली पीढ़ी को माँ गंगा के दर्शन एवं इसके लाभ से वंचित कर रहे हैं। क्या हम अपने इस कु.त्य से भावी पीढ़ियों के मौलिक अधिकार को नष्ट नहीं कर रहे हैं ?

धरती पर अवतरित यह नदी आज अपने उद्गम श्रोत से ही सूखकर सिमटती जा रही है। भारत की जो एक पहचान है, वो खतरे में दिखाई दे रहा है, आखिरकार यह कैसी विडम्बना कि सदियों से अनवरत, अविरल प्रवाहित होती चली आ रही गंगा और इसकी पवित्र जलधारा का महात्म्य आज के समय में धीरे–धीरे नष्ट होता चला जा रहा है।

गंगा दिन पर प्रतिदिन मैली होती चली जा रही है, यदि गंगा नदी सरस्वती नदी के समान विलुप्त हो जाये तो भारत की पहचान और सदियों से प्रवाहित होने वाली हमारी संस्कृति और सभ्यता का क्या होगा, जबकि हिंदुस्तान नाम ही गंगा से जाना जाता है, गंगा के घाटों पर ही महान संतो ने आध्यात्मिकता का शंखनाद किया था। अगर गंगा के अस्मिता को बचाना है, तो गंगा को प्रदूषित होने और विलुप्त होने से बचाना होगा, गंगा को जो दर्द व पीड़ा हो रही है, उससे उसको मुक्त करना पड़ेगा, क्योकि गंगा प्रदूषण से मुक्ति की तलाश में है।

यदि गंगा के प्रदूषण के स्तर को देखा जाये तो यह गंगा नदी दुनिया के सबसे प्रदूषित नदी बनती जा रही है और इसकी गहराई भी दिन–प्रतिदिन कम होती जा रही है। गंगा के किनारे व इसके डेल्टा में पैदा हुए मानव समाज के लिए गंगा नदी जीवनदायिनी के समान है और यहा इनके भरोसे और आस्था का जरिया है, गंगा राष्ट्रधारा का प्रतिनिधित्व करती है, जिससे इसकी महत्ता और भी अधिक बढ़ जाती है। अतः हम सबको मिलकर अपनी इस राष्ट्रीय धरा को प्रदूषित होने से बचाना होगा एवं इसकी अश्मिता की रक्षा के लिए मिलकर आगे आना होगा।[3]

साहित्य सर्वेक्षण– प्रस्तुत अध्ययन में निम्नलिखित साहित्य का संकलन किया गया है :

विवेकानंद तिवारी द्वारा लिखी गई पुस्तक "गंगा समग्र" (2017) में गंगा तीर्थ एवं नदी का भौगोलोक परिचय, गंगा के लौकिक एवं परलौकिक व आर्थिक महत्त्व, भारत की कला में गंगा, राष्ट्रीय एकता में गंगा का महत्त्व, गंगा जल का गुण धर्म एवं इसकी वर्तमान दशा, गंगा का पर्यावरणीय महत्त्व, गंगा परम्परा और कर्मकांड, गंगा के प्रति पाश्चात्य दृष्टीकोण, गंगा संरक्षण के विभिन्न विकल्पों आदि पर विषद रूप से लेखन प्रस्तुत किया गया है, जो गंगा के प्रति श्रद्धा और इसकी महत्ता को दर्शता है।

डॉ. दीनानाथ शुक्ल "दीन" एवं डॉ. बंदना श्रीवास्तव द्वारा रचित पुस्तक "पवित्र गंगा कल, आज और कल" (2013) में गंगा नदी का शाश्वत होना, गंगा नदी और उसके बेसिन, गंगा किनारे लगने वाले त्यौहार और मेले, गंगा नदी में मिलने वाली वनस्पतियाँ व जीव जंतु , गंगा की सहायक नदियाँ, बांध एवं परियोजनायें, गंगा में होने वाले प्रदूषण कारण और निवारण और सबको मोक्ष प्रदान करने वाली गंगा कैसे खुद मोक्ष के राह पर चल पड़ी है, इत्यादि विषयों पर विस्तृत तरीके से प्रकाश डाला गया है।

डा. ब्रम्हदत्त त्रिपाठी एवं अखिलेश कुमार सिंह द्वारा लिखी पुस्तक "गंगाः हिमालय से सागर तक पारिस्थितिकीय अध्ययन (1900)" गंगा के भौगोलिक विवरण, गंगा के जैव संगठन, गंगा में होने वाले पारिस्थिकीय परिवर्तन एवं उसके कारण मानव जीवन पर पड़ने वाले प्रभाव एवं गंगा परियोजनाओं का वैज्ञानिक विश्लेषण किया गया है।

डॉ. वीरेंदर सिंह बघेल द्वारा रचित पुस्तक ''नमामि गंगे (2017)'' रचित पुस्तक में गंगा जी की महिमा, शास्त्रों पुराणों में गंगा का स्वरूप, हरिद्वार, पटना, भागलपुर, प्रयाग में गंगा की स्थिति और उसकी महिमा भारतीय लोकतंत्र में गंगा, सिनेमा में गंगा, गंगा प्रदूषण द्वारा नदी का दुःख, गंगा सफाई, गंगा से जुडी हुयी विभिन्न सरकारी योजनाओं के बारे में गहन रूप से प्रकाश डाला गया है।

अध्ययन क्षेत्र– अध्ययन क्षेत्र के रूप में वाराणसी जनपद के अस्सी घाट को समग्र के रूप में चयनित किया गया है, जिसमें सोद्देश्यपूर्ण निदर्शन का प्रयोग करते हुए 30 उत्तरदाताओं को अपने शोध कार्य में समिल्लित किया गया है।

अध्ययन के उद्देश्य–

प्रस्तुत अध्ययन के निम्नलिखित उद्देश्य निर्धारित किये गए गये हैं :

- गंगा किनारे निवास करने वाले उत्तरदाताओं की सामाजिक, आर्थिक एवं शैक्षणिक स्तर का अध्ययन करना।
- गंगा के प्रति लोगो के आस्था का अध्ययन करना।
- गंगा नदी में होने वाले प्रदूषण के कारणों का अध्ययन करना।
- गंगा सफाई के लिए सरकार एवं निजी संस्थान द्वारा चलाई गई परियोजनाओ का अध्ययन करना।

शोध पद्धतिशास्त्र– प्रस्तुत अध्ययन अनुभाविक प्रकार का है, जिसमें अन्वेषणात्मक, विवरणात्मक एवं निदानात्मक प्रकार के अध्ययन पद्धति का प्रयोग किया गया है।

स्केलिंग तकनीक– इस शोध में स्केलिंग के लिए लिकर्ट स्केलिंग का प्रयोग किया गया है, क्योंकि उत्तरदाताओं के लिए पांच बिंदु का लिकर्ट स्केल समझना काफी आसान एवं उनके दृष्टीकोण से सुविधाजनक होता है।

तथ्य संकलन– आंकड़ो के संकलन हेतु प्राथमिक एवं द्वितीयक दोनों प्रकार के श्रोतों का प्रयोग किया गया है। प्राथमिक श्रोत के अंतर्गत साक्षात्कार अनुसूची का निर्माण कर उत्तरदाताओं से प्रत्यक्ष रूप से मिलकर आंकड़ों का संकलन किया गया है। इसके साथ ही साथ द्वितीयक श्रोत के अंतर्गत पत्र–पत्रिकाएं, समाचार पत्रों, किताबों, शोध पत्र, शोध प्रबंध, इन्टरनेट, इत्यादि संसाधनों का यथोचित उपयोग किया गया है।

तथ्यों का वर्गीकरण एवं विश्लेषण– आंकड़ों का वर्गीकरण एवं विश्लेषण करने के लिए आवृत्ति एवं प्रतिशत का प्रयोग किया गया है, जिससे सामान्य प्रकृति का ज्ञान भी अधिक प्रभावी ढंग से दिखाई दें।[4]

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-18, No.- II, Issues-32, YEAR- April-June-2024

आंकड़ों का अवबोधन–

तालिका संख्या 01
(उत्तरदाताओं की आयु की स्थिति)

उत्तरदाताओं की आयु की स्थिति			
		आवृत्ति	**प्रतिशत**
आयु	20–29	6	20
	30– 39	11	36.67
	40–49	09	30
	50 से अधिक	04	13.33
	योग	**30**	**100**

निर्वचन– तालिका संख्या 01 में चयनित प्रतिदर्श उतर–प्रदेश के अस्सी घाट में चयनित उत्तरदाताओं के आयु समूह की स्थिति को दर्शाता है, जिसमें सबसे अधिक उत्तरदाताओं की संख्या आयुवर्ग 30–39 की संख्या 11 व प्रतिशत 36.67 है। शेष चयनित उत्तरदाताओं का आयुवर्ग 20–29 वर्ष, 40–49 वर्ष, 50 से अधिक वर्ष की संख्या एवं प्रतिशत क्रमशः संख्या 6 व प्रतिशत 20, संख्या 09 व प्रतिशत 30, संख्या 04 व प्रतिशत 13.33 है। अतः अध्ययन से स्पष्ट है कि सबसे अधिक मात्रा 30–39 आयु वर्ग के लोग गंगा नदी से लाभान्वित होते हैं।

तालिका संख्या 02
(उत्तरदाताओं की लिंग की स्थिति)

उत्तरदाताओं की लिंग की स्थिति			
		आवृत्ति	**प्रतिशत**
लिंग	पुरुष	17	56.67
	महिला	13	43.33
	योग	**30**	**100**

निर्वचन– तालिका संख्या 02 का अवबोधन करने से उत्तरदाताओं के लिंग सम्बन्धी स्थिति का वर्णन मिलता है। इस तालिका के अध्ययन से ज्ञात होता है कि पुरुष उत्तरदाताओं की संख्या 17 व प्रतिशत 56.67 है तथा शेष आयुवर्ग में महिला उत्तरदाताओं की संख्या 13 व प्रतिशत 43.33 है, जो यह दर्शाता है कि गंगा का लाभ लेने वालों में पुरुष उत्तरदाताओं की संख्या अधिक है।

तालिका संख्या 03
(उत्तरदाताओं के आय का श्रोत)

उत्तरदाताओं के आय का श्रोत			
		आवृत्ति	**प्रतिशत**
आय	दुकान	07	23.33
	नौकायन	09	30
	पूजा–पाठ	05	16.67
	मार्गदर्शक	06	20
	अन्य	03	10
	योग	**30**	**100**

निर्वचन– तालिका संख्या 03 का अवबोधन करने से उत्तरदाताओं के आय का श्रोत का बोध होता है, जिसमें यह ज्ञात होता है कि सबसे अधिक आय नौकायन से होती हैं, जिनकी संख्या 09 व प्रतिशत 30 है, शेष उत्तरदाताओं में दुकान जिसकी संख्या 07 व प्रतिशत 23.33 एवं पूजा–पाठ कराने वालों की संख्या 05 व प्रतिशत 16.67 है, मार्गदर्शक करने वालों की संख्या 06 व प्रतिशत 20 व अन्य व्यवसाय करने वालों की संख्या 03 व प्रतिशत 10 है। अतः सबसे अधिक आय का श्रोत नौकायन वाले उत्तरदाताओं की है, जो गंगा नदी से लाभान्वित हो रहे हैं।

तालिका संख्या 04
(उत्तरदाताओं के शिक्षा का स्तर)

उत्तरदाताओं के शिक्षा का स्तर			
		आवृत्ति	**प्रतिशत**
शिक्षा	प्राथमिक शिक्षा	03	10
	हाईस्कूल	08	26.67
	इंटरमीडिएट	10	33.33
	ग्रेजुएट	4	13.33
	पोस्ट ग्रेजुएट	3	10
	अन्य शिक्षा	2	6.67
	योग	**30**	**100**

निर्वचन– तालिका संख्या 04 का अवबोधन करने से उत्तरदाताओं के शिक्षा के स्तर का बोध होता है, जिसमें सबसे अधिक संख्या इंटरमीडिएट किये हुए उत्तरदाताओं की है, जिनकी संख्या 10 व प्रतिशत 33.33 है, शेष उत्तरदाताओं में प्राथमिक शिक्षा जिनकी

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-18, No.- II, Issues-32, YEAR- April-June-2024

संख्या 03 व प्रतिशत 10 है, हाईस्कूल पास की संख्या 08 व प्रतिशत 26.67 है, ग्रेजुएट पास की संख्या 04 व प्रतिशत 13.33 है, पोस्ट ग्रेजुएट पास की संख्या 03 व प्रतिशत 10 है, अन्य शिक्षा लिए उत्तरदाताओं की संख्या 02 व प्रतिशत 6.67 है। अतः सबसे अधिक उत्तरदाताओं की संख्या इंटरमीडिएट पास की है।

तालिका संख्या 05

(गंगा में आस्था एवं गंगा को मोक्षदायिनी व पवित्र मानने सम्बन्धी दृष्टीकोण)

गंगा में आस्था एवं गंगा को मोक्षदायिनी व पवित्र मानने सम्बन्धी दृष्टीकोण		
	आवृत्ति	**प्रतिशत**
पूर्णतः सहमत	10	33.33
सहमत	08	26.67
अनिश्चित मत	04	13.33
असहमत	05	16.67
पूर्णतः असहमत	03	10
योग	**30**	**100**

निर्वचन– तालिका संख्या 05 का अवबोधन करने से उत्तरदाताओं का गंगा में आस्था एवं गंगा को मोक्षदायिनी व पवित्र मानने सम्बन्धी दृष्टीकोण को प्रदर्शित कर रहा है। प्रस्तुत तालिका से स्पष्ट है कि सबसे अधिक उत्तरदाता पूर्णतः सहमत हैं, जिनकी संख्या 10 व प्रतिशत 33.33 है, सहमत उत्तरदाताओं की संख्या 08 व प्रतिशत 26.67 है, अनिश्चित मत की संख्या 04 व प्रतिशत 13.33 है, असहमत की संख्या 05 व प्रतिशत 16.67 है, पूर्णतः असहमत की संख्या 03 व प्रतिशत 10 है। अतः इस अध्ययन से ज्ञात होता है कि अधिकतम उत्तरदाता अभी भी गंगा को मोक्षदायिनी व पवित्र मानते हैं।

तालिका संख्या 06

(गंगा में प्रदूषण के कारण जैसे कपड़ा धोना, स्नान करना, फूल माला फेकना, अस्थि विसर्जन करने सम्बन्धी दृष्टीकोण)

गंगा में प्रदुषण के कारण जैसे कपड़ा धोना, स्नान करना, फूल माला फेकना, अस्थि विसर्जन करने सम्बन्धी दृष्टीकोण		
	आवृत्ति	**प्रतिशत**
पूर्णतः सहमत	11	36.67
सहमत	07	23.33
अनिश्चित मत	04	13.33
असहमत	06	20
पूर्णतः असहमत	02	6.67
योग	**30**	**100**

निर्वचन– तालिका संख्या 06 का अवबोधन करने से उत्तरदाताओं के गंगा में होने वाले प्रदूषण के कारण जैसे– कपड़ा धोना, स्नान करना, फूल माला फेकना, अस्थि विसर्जन करने सम्बन्धी दृष्टीकोण को दर्शाता है, जिसमें सबसे अधिक उत्तरदाता पूर्णतः सहमत हैं, जिनकी संख्या 11 व प्रतिशत 36.67 है, शेष सहमत की संख्या 07 व प्रतिशत 23.33 है , अनिश्चित मत की संख्या 04 व प्रतिशत 13.33 है, असहमत की संख्या 06 व प्रतिशत 20 है, पूर्ण असहमत की संख्या 02 व प्रतिशत 06.67 है। अतः उपर्युक्त तालिका से ज्ञात होता है कि प्रदूषण फैलाने में ये सभी कारक जिम्मेदार हैं, जिससे गंगा में प्रदूषण होता है।

तालिका संख्या 07

(गंगा सफाई के लिए सरकार द्वारा चलाई गई परियोजनाओं एवं गैर सरकारी संगठनों के द्वारा हो रहे योगदान सम्बन्धी दृष्टीकोण)

गंगा सफाई के लिए सरकार द्वारा चलाई गई परियोजनाओ एवं गैर सरकारी संगठनों के द्वारा हो रहे योगदान सम्बन्धी दृष्टीकोण		
	आवृत्ति	**प्रतिशत**
पूर्णतः सहमत	12	40
सहमत	09	30
अनिश्चित मत	03	10
असहमत	04	13.33
पूर्णतः असहमत	02	6.67
योग	**30**	**100**

निर्वचन– तालिका संख्या 07 का अवबोधन करने से उत्तरदाताओं के गंगा सफाई के लिए सरकार एवं द्वारा चलाई गई परियोजनाओं एवं गैर सरकारी संगठनों के द्वारा हो रहे योगदान सम्बन्धी दृष्टीकोण को दर्शाता है। जिसमें सबसे अधिक उत्तरदाता पूर्णतः सहमत हैं, जिनकी संख्या 12 व प्रतिशत 40 है, शेष सहमत की संख्या 09 व प्रतिशत 30 है, अनिश्चित मत की संख्या 03 व प्रतिशत 10 है, असहमत की संख्या 04 व प्रतिशत 13.33 है, पूर्ण असहमत की संख्या 02 व प्रतिशत 6.67 है। अतः उपर्युक्त तालिका से ज्ञात होता है कि प्रदूषण के स्तर को रोकने में सरकार एवं गैर सरकारी संगठनों द्वारा विभिन्न योजनाओं का साकारात्मक प्रभाव पड़ा है।

निष्कर्ष–

– उतर–प्रदेश में वाराणसी जनपद के अस्सी घाट से चयनित उत्तरदाताओं के आयु समूह की स्थिति को दर्शाता है, जिसमें सबसे अधिक उत्तरदाताओं की संख्या आयुवर्ग 30–39 की संख्या 11 व प्रतिशत 36.67 है। शेष चयनित उत्तरदाताओं का आयुवर्ग 20–29 वर्ष,

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-18, No.- II, Issues-32, YEAR- April-June-2024

40–49 वर्ष, 50 से अधिक वर्ष की संख्या एवं प्रतिशत क्रमशः संख्या 6 व प्रतिशत 20, संख्या 09 व प्रतिशत 30, संख्या 04 व प्रतिशत 13.33 है। अतः अध्ययन से स्पष्ट है कि सबसे अधिक मात्रा 30–39 आयु वर्ग के लोग गंगा नदी से लाभान्वित होते हैं।

– उतर–प्रदेश में वाराणसी जनपद के अस्सी घाट से चयनित उत्तरदाताओं के लिंग सम्बन्धी स्थिति का वर्णन मिलता है। जिसमें पुरुष उत्तरदाताओं की संख्या 17 व प्रतिशत 56.67 है तथा शेष आयुवर्ग में महिला उत्तरदाताओं की संख्या 13 व प्रतिशत 43. 33 है, जो यह दर्शाता है कि गंगा का लाभ लेने वालो में पुरुष उत्तरदाताओं की संख्या अधिक है।

– उतर–प्रदेश में वाराणसी जनपद के अस्सी घाट से चयनित उत्तरदाताओं के आय का श्रोत का बोध होता है, जिसमें यह ज्ञात होता है कि सबसे अधिक आय नौकायन से होती हैं, जिनकी संख्या 09 व प्रतिशत 30 है, शेष उत्तरदाताओं में दुकान जिसकी संख्या 07 व प्रतिशत 23.33 एवं पूजा–पाठ कराने वालों की संख्या 05 व प्रतिशत 16.67 है, मार्गदर्शक करने वालों की संख्या 06 व प्रतिशत 20 व अन्य व्यवसाय करने वालों की संख्या 03 व प्रतिशत 10 है। अतः सबसे अधिक आय का श्रोत नौकायन वाले उत्तरदाताओं की है, जो गंगा नदी से लाभान्वित हो रहे हैं।

– उतर–प्रदेश में वाराणसी जनपद के अस्सी घाट से चयनित उत्तरदाताओं के शिक्षा के स्तर का बोध होता है, जिसमें सबसे अधिक संख्या इंटरमीडिएट किये हुए उत्तरदाताओं की है, जिनकी संख्या 10 व प्रतिशत 33.33 है, शेष उत्तरदाताओं में प्राथमिक शिक्षा जिनकी संख्या 03 व प्रतिशत 10 है, हाईस्कूल पास की संख्या 08 व प्रतिशत 26.67 है, ग्रेजुएट पास की संख्या 04 व प्रतिशत 13.33 है, पोस्ट ग्रेजुएट पास की संख्या 03 व प्रतिशत 10 है, अन्य शिक्षा लिए उत्तरदाताओं की संख्या 02 व प्रतिशत 6.67 है। अतः सबसे अधिक उत्तरदाताओं की संख्या इंटरमीडिएट पास की है।

– वर्णनात्मक अध्ययन से ज्ञात होता है कि गंगा में आस्था रखने वाले लोग आज भी गंगा को मोक्षदायिनी व पवित्र मानते हैं। जिसमें सबसे अधिक उत्तरदाता पूर्णतः सहमत हैं, जिनकी संख्या 10 व प्रतिशत 33.33 है, सहमत उत्तरदाताओं की संख्या 08 व प्रतिशत 26.67 है, अनिश्चित मत की संख्या 04 व प्रतिशत 13.33 है, असहमत की संख्या 05 व प्रतिशत 16.67 है, पूर्णतः असहमत की संख्या 03 व प्रतिशत 10 है। अतः इस अध्ययन से ज्ञात होता है कि अधिकतम उत्तरदाता अभी भी गंगा को मोक्षदायिनी व पवित्र मानते हैं।

– वर्णनात्मक अध्ययन से ज्ञात होता है कि गंगा में होने वाले प्रदूषण के कारण जैसे– कपड़ा धोना, स्नान करना, फूल माला फेकना, अस्थि विसर्जन है। जिसमें सबसे अधिक उत्तरदाता पूर्णतः सहमत हैं, जिनकी संख्या 11 व प्रतिशत 36.67 है, शेष सहमत की संख्या 07 व प्रतिशत 23.33 है, अनिश्चित मत की संख्या 04 व प्रतिशत 13.33 है, असहमत की संख्या 06 व प्रतिशत 20 है, पूर्ण असहमत की संख्या 02 व प्रतिशत 06.67 है। अतः प्रदूषण फैलाने में ये सभी कारक जिम्मेदार है, जिससे गंगा में प्रदूषण होता है।

– वर्णनात्मक अध्ययन से ज्ञात होता है कि गंगा सफाई के लिए सरकार द्वारा चलाई गई परियोजनाओं एवं गैर सरकारी संगठनों के द्वारा हो रहे योगदान का दर्शाता है, जिसमें सबसे अधिक उत्तरदाता पूर्णतः सहमत हैं, जिनकी संख्या 12 व प्रतिशत 40 है, शेष सहमत की संख्या 09 व प्रतिशत 30 है, अनिश्चित मत की संख्या 03 व प्रतिशत 10 है, असहमत की संख्या 04 व प्रतिशत 13. 33 है, पूर्ण असहमत की संख्या 02 व प्रतिशत 6.67 है। अतः की प्रदूषण के स्तर को रोकने में सरकार एवं गैर सरकारी संगठनों द्वारा विभिन्न योजनाओं का साकारात्मक प्रभाव पड़ा है।

सुझाव–

1. गंगा नदी में कपड़ा न धोने, बिना साबुन के नहाने के लिए, फूलमाला न फेकने के लिए कूड़ा कचरा न फेकने के लिए लोगों को जागरूक किया जाये।
2. गंगा घाटों पर यथासंभव कूड़ेदान की संख्या बढ़ानी चाहिए।
3. कर्मकांड से फैलने वाले कूड़ें–कचरें का एक निश्चित समाधान करना चाहिए।
4. गंगा किनारे रोजगार सम्बन्धी मुद्दों पर सरकार को और प्रोत्साहन व बढ़ावा देना चाहिए।
5. सरकारी एवं गैर सरकारी संगठनों के साथ ही साथ स्थानीय लोगों को गंगा सफाई में अपना योगदान करना चाहिए।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. शुक्ल डा० दीनानाथ श्रीवास्तव, डा० वन्दना (2013), पवित्र गंगा कल, आज और कल, हिन्दुस्तानी ऐकेडमी, प्रयागराज, 211001. पेज न. 14.
2. तिवारी, विवेकनंद (2017) गंगा समग्र, सस्ता साहित्य मंडल प्रकाशन, नई दिल्ली 110001 पेज न.218.
3. शुक्ल डा० दीनानाथ श्रीवास्तव, डा० वन्दना (2013), पवित्र गंगा कल, आज और कल, हिन्दुस्तानी ऐकेडमी, प्रयागराज, 211001. पेज न. 156,157.
4. सत्येन्द्र त्रिपाठी, श्रीवास्तव अनिल कुमार (2017), सामाजिक अनुसन्धान एवं सांख्यिकी रावत पब्लिकेशन, जयपुर 302004.
5. त्रिपाठी, ब्रहमदत्त, सिंह अखिलेश कुमार, (1900) गंगाः हिमालय से सागर तक पारिस्थितिकीय अध्ययन नागरी प्राचारणी सभा, वाराणसी।
6. बघेल, डा० वीरेन्द्र सिंह (2017) नमामि गंगे. अनुराग प्रकाशन, नई दिल्ली।

*****